नई दुनिया, 20 मार्च 2012

जन कल्याण के लिए अंतरराष्ट्रीय कार्यशाला

इंडियन एसोसिएशन ऑफ रीहेबिलिटेशन प्रोफेशनल और बतौर मीडिया पार्टनर नईदुनिया द्वारा विकलांगों के विकास के प्रति वैश्विक संकल्प अंतरराष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में स्वयं इंडिया की संस्थापक अध्यक्ष एवं जिंदल शॉ लिमिटेड की प्रबंध निदेशक स्मिनु जिंदल ने कहा कि हमें समाज में विकलांग व्यक्तियों की उपस्थिति का सम्मान करना चाहिए। बेहतर शिक्षा और काबिलियत की बदौलत इन्हे समाज का अभिन्न अंग बनाया जा सकता है। इससे न सिर्फ वे अपने पैरों पर खड़े हो सकते हैं बल्कि देश के आर्थिक विकास में अपना योगदान भी दे सकते हैं।

इस मौके पर सामाजिक न्याय एवं आधिकारिता मंत्रालय के केंद्रीय मंत्री मुकुल वासनिक ने कहा कि नि:शक्त जनों की हालत में सुधार के लिए कानूनी पहलुओं के साथ उनके प्रति सामाजिक नजरिये में बदलाव की आवश्यकता है। हालांकि पिछले कुछ वर्षों के दौरान नि:शक्तों के विकास एवं उन्हे अधिकार दिलाने की दिशा में काफी काम किया गया है लेकिन अभी भी वे समाज की मुख्यधारा से कटे हुए हैं। इंडियन एसोसिएशन ऑफ रिहैबिलिटेशन प्रोफेशनल के अध्यक्ष डॉ. जेपी सिंह ने बताया कि इस कार्यशाला में नि:शक्तों को समाज की मुख्यधारा से जोड़ने में आने वाली चुनौतियों से निपटने की रणनीति बनाई गई है जिससे नि:शक्त सशक्त बन सकेंगे। इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के राष्ट्रीय विकलांगता अध्ययन केंद्र की उपनिदेशक डॉ. हेमलता ने इस कार्यक्रम का संचालन किया। इस कार्यशाला में मुख्य रूप से नि:शक्तजनों के आत्मनिर्भर तथा सम्मानजनक जीवन के लिए जरूरी शिक्षा, मनोसामाजिक, चिकित्सकीय, व्यावसायिक आदि से संबंधित चुनौतियों तथा भविष्य हेतु आवश्यक रणनीतियों पर प्रकाश डाला गया। कार्यशाला में नि:शक्तों द्वारा संसाधनों के न्यूनतम उपयोग तथा संयोजन एंव शोध और समावेशन के लिए जीवन चक्रिय उपागमों पर चर्चा के साथ ही टीम एप्रोच, यूनिवर्सल डिजाइन, नि:शक्तजनों के परिवार तथा समुदाय के आर्थिक सशक्तीकरण एवं हस्तक्षेपण के विभिन्न नये मार्डलों के क्रियान्वयन पर मुख्य रूप से विचार किया गया। **(कासं)**